



चिकोरी है गुणवत्तायुक्त चारा

एल.आर. गुर्जर*, रंग लाल मीणा* और पवन कुमार माहौर*

चिकोरी का पौधा प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज और फाइटोबायोएक्टिव तत्वों की उच्च मात्रा के कारण पशु और मानव दोनों के लिये लाभदायक है। यह देखा गया है कि इस पौधे के कुछ फाइटोकोन्स्टिट्यूट्स में ऐसे गुण होते हैं, जो परजीवी या अन्य अवस्था में पशुओं को लाभ पहुंचाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार के गुण चिकोरी को एक आदर्श, सस्ता, प्राकृतिक और टिकाऊ पशु उपयोगी पूरक या वैकल्पिक चारा सामग्री बनाते हैं। प्लांट सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स की उच्च सांद्रता में विषाक्तता को रोकने के लिये जब चिकोरी (कासनी) को आहार में शामिल किया जाता है या जुगाली करने वालों पशुओं को चराया जाता है, तब सावधानी बरती जानी चाहिए।



चिकोरी (कासनी) अपने मूल में सड़कों के किनारे एक जंगली पौधे के रूप में रहता है। इसे *सिचोरियम एंटीबास* या चिकोरी के नाम से भी जाना जाता है। अनुकूल परिस्थितियों में चिकोरी, गर्म मौसम में बड़ी मात्रा में उच्च गुणवत्ता वाले चारे का उत्पादन करती है। चारे के रूप में चिकोरी का उपयोग पशुओं में लैग्युम पौधों के समान पोषणयुक्त है और घास आधारित चरागाहों से अपेक्षाकृत अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके अलावा चिकोरी, पशुओं में कुछ आंतरिक परजीवियों को कम कर सकती है। इसमें कृमिनाशकों के उपयोग को कम करने की भी क्षमता होती है।

पशुओं के चारे में अनाज का उपयोग मानव पोषण के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। कुछ अनाज बहुत महंगे होते हैं। इसलिए वैकल्पिक खाद्य पदार्थ की आहार में शुरूआत आवश्यक

है, जो पशुपालन व्यवसाय में उत्पादन लागत की चुनौतियों को दूर कर सके। इसके साथ ही पशु स्वास्थ्य, उत्पादन और उत्पाद की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम हो सकें। चिकोरी के पादप भाग जैसे-बीज, पत्ते और जड़ों को पशुओं के उत्पादन प्रदर्शन से समझौता किए बिना छोटे जुगाली करने वाले आहारों में पूरक के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

सारणी 1. चिकोरी पत्तियों से प्राप्त पोषण

क्र. सं.	अवयव	मात्रा (प्रतिशत में)
1	नमी	83
2	क्रूड प्रोटीन	15
3	क्रूड ईथर एक्स्ट्रेक्ट	4
4	भस्म	11
5	कुल कार्बोहाइड्रेट्स	71
6	कुल घुलनशील शर्करा	8
7	लिग्निन	11
8	क्रूड फाइबर	17

सारणी 2. चिकोरी पत्तियों से प्राप्त खनिज अवयव

क्र.सं.	अवयव	मि.ग्रा. प्रति 100 ग्राम
1	कैल्शियम	275
2	पोटेशियम	170
3	मैग्नीशियम	7
4	सोडियम	90
5	आयरन	10
6	कॉपर	0.70
7	मैगनीज	0.90
8	जिंक	0.91

चिकोरी से पोषण

जुगाली करने वाले पशुओं के लिये चिकोरी अत्यधिक सुपाच्य है। इसमें फाइबर की मात्रा कम होती है। चिकोरी की जड़ें घोड़ों के लिये प्रोटीन और वसा की उपलब्धता के कारण जई के उत्कृष्ट विकल्प के रूप में सक्षम हैं। इसमें कम मात्रा में टैनिन होता है, जो जुगाली करने वाले पशुओं के लिए प्रोटीन उपयोग क्षमता को बढ़ा सकता है। कुछ टैनिन आंतों के परजीवी को कम करते हैं। पोषणयुक्त चिकोरी आंतरिक परजीवियों के लिये विषाक्त हो सकती है। इसमें कृमि के बोझ को कम करने वाले गुण पाए गए हैं, जिससे चारा पूरक के रूप में इसका उपयोग हो सकता है। चिकोरी में हल्का कसैलापन पाया जाता है, जो कि मुख्य रूप से सेस्क्विटेरपीने, लेक्टोन्स, लैक्टोसिन और लक्टूकोपीक्रिन के कारण होता है।

चारा उपज

चिकोरी की विभिन्न किस्मों के पौधे रोपाई के लगभग 120 दिनों के आसपास खुदाई के लिये तैयार हो जाते हैं। इनसे कंदों के रूप में प्रति हैक्टर औसतन उत्पादन 20 टन के लगभग प्राप्त होता है। इसके बीजों का प्रति हैक्टर उत्पादन 5 क्विंटल के आसपास पाया जाता है। हरे चारे के रूप में उगाई गई फसल की कटाई बीज रोपाई के 25 से 30 दिनों बाद की जाती है। एक बार लगाई गई फसल से 10 से 12 कटाइयां आसानी से कर सकते हैं। पहली कटाई के बाद बाकी की कटाई के लिये इसके पौधे 12 से 15 दिनों में तैयार हो जाते हैं। कंद के रूप में फसल प्राप्त करने के लिये इसकी जड़ों की खुदाई बीज रोपाई के तीन से चार माह पश्चात की जाती है। इसके बीजों को प्राप्त करने के लिये खुदाई की गई जड़ों से बीजों को मशीन द्वारा अलग कर लिया जाता है। इसके कंद और बीज एक साथ तैयार हो जाते हैं।

*भाकूअनुप-केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर